

(GCF-2,3,4,5,6,7,8,10 VCF-1,2, VDCF-1,2 & SCF-1,2)

DATE: 26.11.2021

MAXIMUM MARKS: 100

TIMING: 3 Hours

BUSINESS LAW & BUSINESS CORRESPONDENCE & REPORTING

Question No. 1 is Compulsory. Answer any four question from the remaining five questions. Wherever necessary, suitable assumptions should be made and disclosed by way of note forming part of the answer.

Working Notes should form part of the answer.

Answer 1:

- (a) (i) यह एक निहित संविदा है और ए को उसके द्वारा वर्णित कुली की सेवाओं के लिए भुगतान करना होगा।
अंतर्निहित संविदा : निहित संविदा निहितार्थ से अस्तित्व में आते हैं। अक्सर निहितार्थ कानून और या कार्रवाई द्वारा होता है। अधिनियम की धारा 9 ऐसे निहित संविदों पर विचार करती है जब यह निर्धारित करती है कि जहाँ तक इस तरह के प्रस्ताव या स्वीकृति शब्दों के अलावा अन्यथा की जाती है, वादा निहित कहा जाता है। {2 M}
- (ii) खोए हुए माल के खोजकर्ता को वास्तविक मालिक को वापस करने के लिए दायित्व को संविदा से उत्पन्न नहीं कहा जा सकता है, यहाँ तक कि इसके दूरस्थ अर्थ में भी नहीं है, क्योंकि न तो प्रस्ताव और स्वीकृति है और न ही सहमति है। इन्हें अर्ध-संविदा कहा जाता है।
अर्ध-संविदा : एक अर्ध-संविदा एक वास्तविक संविदा नहीं है, लेकिन यह एक संविदा जैसा दिखता है। यह कुछ परिस्थितियों में कानून द्वारा बनाया गया है। जब कोई वास्तविक संविदा मौजूद नहीं होता है तो कानून कानूनी अधिकारों और दायित्वों को बनाता है और लागू करता है। ऐसे दायित्वों को अर्ध-संविदा के रूप में जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, यह एक संविदा है जिसमें संविदा करने के लिए किसी भी पक्ष की ओर से कोई इरादा नहीं है, लेकिन कानून पक्षकारों पर एक संविदा लागू करता है। {2 M}
- (iii) ऊपर के संविदा एक शून्य संविदा है।
शून्य संविदा : धारा 2 (जे) में निम्नानुसार कहा गया है : “एक संविदा जो कानून द्वारा लागू होने योग्य नहीं रह जाता है, जब वह लागू होना बंद हो जाता है तो वह शून्य हो जाता है।” इस प्रकार, एक शून्य संविदा वह है जिसे कानून की अदालत द्वारा लागू नहीं किया जा सकता है। {2 M}

Answer:

- (b) (a) यह एक वैध स्पष्ट संविदा है।
 (b) यह एक संविदा नहीं है क्योंकि यह एक सामाजिक समझौता है।
 (c) यह एक अंतर्निहित संविदा है। A बस के किराए का भुगतान करने के लिए बाध्य है।
 (d) यह एक कानूनी संबंध बनाने के इरादे के बिना एक सामाजिक समझौता है। {1½ M Each Points}

Answer 2:

- (a) **केवल मौन कपट के समान नहीं है :** किसी व्यक्ति की संविदा में प्रवेश करने की इच्छा को प्रभावित करने वाले तथ्यों के बारे में केवल मौन कपट नहीं है, लेकिन जहाँ बोलना किसी व्यक्ति का कर्तव्य है, या उसकी चुप्पी भाषण के बराबर है, मौन कपट के बराबर है। यह कानून का एक नियम है कि केवल मौन रहने से कपट नहीं होती है। एक संविदा करने वाला पक्ष दूसरे पक्ष को पूरी सच्चाई का खुलासा करने या संविदा की विषय वस्तु को प्रभावित करने वाली पूरी जानकारी देने के लिए बाध्य नहीं है। नियम भारतीय संविदा अधिनियम की धारा 17 के स्पष्टीकरण में निहित है जो स्पष्ट रूप से स्थिति बताता है कि किसी व्यक्ति की संविदा में प्रवेश करने की इच्छा को प्रभावित करने वाले तथ्यों के बारे में केवल मौन कपट नहीं है। {3 M}
- इस नियम के अपवाद:**
- (i) जहाँ मामले की परिस्थितियों ऐसी हों कि उन्हें ध्यान में रखते हुए, चुप रहने वाले व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह बोलें। बोलने का कर्तव्य तब उत्पन्न होता है जब एक संविदा करने वाला पक्ष {2 M}

- दूसरे पर विश्वास और विश्वास रखता है या जहाँ एक पक्ष को दूसरे की अच्छी समझ (जैसे बीमा संविदा) पर निर्भर होना पड़ता है।
- (ii) मौन अपने आप में, भाषण के बराबर है।

Answer:

- (b) भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872 की धारा 42 के अनुसार जब दो या अधिक व्यक्तियों ने संयुक्त वचन दिया हो तो अनुबंध से विपरीत आशय प्रकट न होने पर, वचनदाताओं को संयुक्त रूप से अनुबंध का निष्पादन करना चाहिए। उनमें से किसी भी मृत्यु होने पर उसके उत्तराधिकारी, जीवित वचनदाताओं के साथ संयुक्त रूप से अनुबंध का निष्पादन करेंगे। सभी वचनदाताओं की मृत्यु होने की दशा में उन सभी के उत्तराधिकारी मिलकर अनुबंध का निष्पादन करेंगे।
- धारा 43 के अनुसार वचनग्रहीता किसी भी संयुक्त वचनदाता से अनुबंध का निष्पादन करा सकता है। इस प्रकार से संयुक्त वचनदाता का दायित्व केवल संयुक्त ही नहीं, बल्कि संयुक्त एवं पृथक भी होता है। धारा 43 के अनुसार अनुबंध से विपरीत आशय प्रकट न होने पर वचनग्रहीता इनमें से किसी एक अथवा अधिक संयुक्त वचनदाताओं को निष्पादन करने के लिए बाध्य कर सकता है।
- धारा 43 संयुक्त वचनदाताओं की दशा में अंशदान के विषय में वर्णन करती है। वचनग्रहीता प्रत्येक वचनदाता को बराबर का अंशदान करने के लिए बाध्य कर सकते हैं (जब तक कि अनुबंध से इसका विपरीत आशय प्रकट न होता हो) यदि कोई भी संयुक्त वचनदाता अपना अंशदान देने में असमर्थ है तो बाकी के संयुक्त वचनदाता इस कमी को बराबर-बराबर अनुपात में पूरा करेंगे।
- उपर्युक्त धाराओं के प्रावधानों के अनुसार:
- (1) Y, X व Z से अंशदान मांग सकता है, क्योंकि XYZ संयुक्त वचनदाता है। } {1 M}
- (2) X के उत्तराधिकारी Y को अंशदान देने के लिए दायी है, लेकिन एक उत्तराधिकारी का दायित्व उसे उत्तराधिकार में मिलने वाली सम्पत्ति तक सीमित है। } {1 M}
- (3) Y व Z की सम्पत्ति में से अंशदान प्राप्त कर सकता है। } {1 M}

Answer 3:

- (a) निम्नलिखित गर्भित आश्वासन होते हैं :-
1. **शान्तिपूर्ण कब्जे का आश्वासन** : एक गर्भित आश्वासन से तात्पर्य है कि क्रेता को शान्तिपूर्वक तरीके से वस्तु के प्रयोग करने का अधिकार होगा। अर्थात् यदि क्रेता ने माल को कब्जे में ले लिया है और बाद में इस अधिकार में बाधा डाली जाती है, तब उसे विक्रेता पर आश्वासन भंग करने के लिए वाद प्रस्तुत करने का अधिकार है जब तक कि अनुबन्ध की परिस्थितियों से किसी भिन्न अर्थ का पता न चलता हो। } {1 1/2 M}
2. **भार मुक्त होने का आश्वासन** : एक गर्भित आश्वासन की वस्तुएँ किसी तीसरे पक्ष के प्रति जिसके विषय में क्रेता को अनुबन्ध के समय अथवा उससे पूर्व कोई सूचना नहीं दी गई थी अथवा उसे पता नहीं था, भार मुक्त होंगी।
- उदाहरण** : 'अ' ने 15,000 रु. के ऋण के लिए 'स' के पास अपनी कार को गिरवी रखा तथा उसको कार का अगले दिन कब्जा देने का वचन दिया। 'अ' ने, फिर तुरन्त ही कार को 'ब' को बेच दिया जिसने इस तथ्य को जाने बिना, सद्भावना में कार को खरीद लिया। 'ब' या तो ऋण लौटाने के लिए 'अ' को कह सकता है या स्वयं पैसा चुका सकता है तथा फिर ब्याज के साथ रकम वापिसी के लिए 'अ' के विरुद्ध वाद दायर कर सकता है। } {1 1/2 M}
3. **माल के खतरनाक होने के विषय में सूचना** : विक्रेता के द्वारा एक और गर्भित आश्वासन होता है कि यदि वस्तु मूल रूप से खतरनाक है अथवा क्रेता के लिए इसके खतरनाक होने की संभावना है और क्रेता उक्त खतरे के प्रति अनभिज्ञ है तब विक्रेता के लिए यह आवश्यक है कि वह क्रेता को सम्भावित खतरे के सम्बन्ध में चेतावनी दे। यदि इस आश्वासन को भंग किया जाता है तब विक्रेता हर्जाना देने के लिए उत्तरदायी होगा। } {1 1/2 M}

4. गुणवत्ता या उपयुक्तता के प्रति व्यापार के तौर-तरीके के द्वारा आश्वासन : किसी उद्देश्य विशेष के लिए गुणवत्ता या उपयुक्तता के प्रति एक गर्भित आश्वासन व्यापार के तौर-तरीकों द्वारा जोड़ा जा सकता है।

{1½ M}

उदाहरण : नीलामी द्वारा ड्रग्स बेचे गये तथा व्यापार की परम्परा के अनुसार अग्रिमतः यह बताना जरूरी था कि ड्रग्स की गुणवत्ता में उत्पन्न भारी कोई हानि हो सकती है। इसे आश्वासन भंग माना जायेगा यदि ऐसी कोई अभिव्यक्ति नहीं की जाती तथा माल को दोषपूर्ण पाया जाता है।

Answer:

(b) यदि विक्रेता अनुबन्ध भंग करता है तो क्रेता को विक्रेता के विरुद्ध निम्न अधिकार मिल जाते हैं।

1. **सुपुर्दगी न देने के लिये हर्जाना** – जहाँ विक्रेता गलती से क्रेता को माल की सुपुर्दगी करने से मना करता है या लापरवाही दिखाता है तो क्रेता गैर-सुपुर्दगी के लिए हर्जाने हेतु विक्रेता पर वाद कर सकता है।

{1 M}

2. **विशिष्ट निष्पत्ति के लिए वाद** – जहाँ विक्रेता विक्रय के अनुबन्ध का विखण्डन करता है तो क्रेता विशिष्ट निष्पत्ति के लिए न्यायालय में अपील कर सकता है। न्यायालय विशिष्ट निष्पत्ति के लिए आदेश दे सकता है केवल जब :

{1½ M}

- (a) माल निर्दिष्ट तथा विशिष्ट होता है
(b) हर्जाने अपर्याप्त हो; या
(c) माल अद्भुत तथा कीमती हो।

3. **आश्वासन भंग के लिए वाद** – जहाँ विक्रेता की ओर से आश्वासन भंग हुआ है या जहाँ शर्त भंग को आश्वासन भंग के रूप में लेने का चयन करता है तो क्रेता ऐसे आश्वासन भंग के आधार पर माल को अस्वीकार करने का अधिकार नहीं रखता। लेकिन वह –

{1½ M}

- (a) मूल्य को कम करने या संकुचित करने में आश्वासन भंग को विक्रेता के विरुद्ध खड़ा कर सकता है; या
(b) आश्वासन भंग के लिए हर्जाने हेतु विक्रेता पर वाद कर सकता है।

4. **देय तिथि से पूर्व विक्रेता द्वारा अनुबन्ध भंग के लिए हर्जाने हेतु वाद** – क्रेता अनुबन्ध को जारी मानकर चल सकता है तथा सुपुर्दगी की तिथि की प्रतीक्षा कर सकता है या वह अनुबन्ध को भंग मानकर चल सकता है तथा माल हेतु हर्जाने के लिए वाद कर सकता है।

{1 M}

5. **ब्याज हेतु वाद** – क्रेता चुकाई गई राशि को वसूल करने के लिए विशेष हर्जाने या ब्याज वसूल करने का अधिकार रखता है जहाँ भुगतान हेतु प्रतिफल असफल हो चुका है।

उदाहरण –

- a. सिगरेटों के विक्रय के मामले में, जो उपयोग के लिए अनुपयुक्त पाई जाती हैं अनुबन्ध मूल्य तथा रिलीज किये गये मूल्य के बीच अन्तर के आधार पर हर्जाने दिये गये।
b. अधिकार के हस्तांतरण व पंजीकरण की अनुपस्थिति की दशा में, क्रेता शर्तों के भंग के लिए हर्जाना नहीं माँग सकता है तथा विक्रय के सम्बन्ध में आश्वासनों के विखण्डन हेतु क्षतिपूर्ति का दावा नहीं कर सकता है।

{1 M}

Answer 4:

- (a)** आन्तरिक प्रबन्ध सिद्धान्त की विवेचना रॉयल ब्रिटिश बैंक बनाम तारकुण्ड (1956) 6E एण्ड B 327 में किया गया था। इस मामले में भी आर.बी.बी. के निर्देशकों ने एक बॉण्ड दिया था। कम्पनी के अन्तर्नियमों के द्वारा निर्देशकों को उचित प्रस्ताव पारित करवा लेने के उपरान्त ही बॉण्ड जारी करने का अधिकार प्रदान किया था। उपरोक्त के होते ही यह निर्णय दिया गया कि बॉण्ड के लिए T दावा कर सकता है, क्योंकि उसे यह अधिकार प्राप्त है कि वह यह माने कि ऐसा प्रस्ताव पारित करवा लिया गया होगा। इस प्रकार वह व्यक्ति जो कम्पनी के साथ व्यवहार कर रहे हैं उन्हें यह मानने का अधिकार है कि निर्देशकों या उसके अधिकारी जो कृत्य कर रहे हैं वह वैधानिक रूप से किये जा रहे हैं यदि ऐसे कृत्य उनको प्रदत्त अधिकार क्षेत्र में आते हैं। पर यह सिद्धान्त वहाँ पर लागू नहीं होता है जहाँ पर जो व्यक्ति कम्पनी से व्यवहार कर रहा है

{3 M}

अगर उसे यह सूचना थी कि कम्पनी में अनियमितता हो रही है या जहाँ पर वह व्यक्ति जो कम्पनी से व्यवहार कर रहा है उस पर कोई जाँच की जाती है या जब कोई प्रपत्र जिसे यह माना जाता है कि वह कम्पनी की ओर से जारी किया गया है या बनाया गया है वह कपटपूर्ण और जाली है तो उस व्यक्ति को इस सिद्धान्त का कोई लाभ नहीं मिलता है।

दी गई समस्या में आन्तरिक प्रबन्ध का सिद्धान्त लागू नहीं हो सकता है क्योंकि प्रपत्र कपटपूर्ण एवं जाली है। जो कि A को अधिकार नहीं देते हैं और इसी प्रकार B को भी अधिकार नहीं मिलते हैं। खरीदार का अधिकार बेचने वाले के अधिकार से अच्छा नहीं हो सकता है (माल बेचान अधिनियम 1930) इसलिए B अंशों को अपने नाम में पंजीकृत करवाने में समर्थ नहीं होगा। {3 M}

Answer:

(b) हां, कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 8 के प्रावधानों का पालन करते हुए कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत एक गैर-लाभकारी संगठन को एक कंपनी के रूप में पंजीकृत किया जाना चाहिए। कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 8 उन कंपनियों के गठन से संबंधित है, जिनका गठन किया गया है। {1 M}

- वाणिज्य, कला, विज्ञान, खेल, शिक्षा, अनुसंधान, समाज कल्याण, धर्म, दान, पर्यावरण संरक्षण आदि की धर्मार्थ वस्तुओं को बढ़ावा देना। {1 M}
- ऐसी कंपनी अपने लाभ को लागू करने का इरादा रखती है। Each}

- अपने सदस्यों को किसी भी लाभांश के भुगतान पर रोक लगाना।

केन्द्र सरकार के पास धारा 8 कंपनी को पंजीकृत करने के लिए लाइसेंस जारी करने की शक्ति है।

- (i) धारा 8 केन्द्र सरकार को ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के संघ को सीमित देयता वाली कंपनी के रूप में पंजीकृत करने की अनुमति देती है, इसके नाम में 'लिमिटेड' या 'प्राइवेट लिमिटेड' शब्द जोड़े बिना, ऐसी शर्तों पर लाइसेंस जारी करके जो वह उचित समझे। {1 M}
- (ii) रजिस्ट्रार आवेदन पर ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के संघ को इस धारा के तहत एक कंपनी के रूप में पंजीकृत करेगा। Each}
- (iii) पंजीकरण पर कंपनी को एक लिमिटेड कंपनी के समान विशेषाधिकार और दायित्व प्राप्त होंगे।

Answer 5:

(a) निम्न कम्पनियों पर कम्पनी अधिनियम 2013 के प्रावधान लागू होते हैं:

- इस अधिनियम या पूर्व कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत बनी कम्पनी। } {1 M}
- बीमा कम्पनी (अपवाद: जब प्रावधान, बीमा अधिनियम व आई.आर.डी.ए अधिनियम के विरुद्ध है।) } {1 M}
- बैंकिंग कम्पनी (अपवाद: जब प्रावधान Banking Regulation Act के विरुद्ध हों।) } {1 M}
- बिजली कम्पनी (अपवाद: जब प्रावधान Electricity Act के विरुद्ध हों।) } {1 M}
- विशिष्ट अधिनियम के द्वारा संचालित कम्पनी। } {1 M}
- अन्य निगम निकाय, जिनका समामेलन किसी अधिनियम के अन्तर्गत हुआ हो और केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिसूचना जारी की गई हों। } {1 M}

Answer:

(b) परिस्थितियाँ जिनमें एलएलपी को प्राधिकरण द्वारा समाप्त किया जा सकता है (धारा 64) : एक एलएलपी प्राधिकरण के द्वारा समाप्त की जा सकती है:

- (a) यदि एलएलपी निर्णय करती है कि एलएलपी प्राधिकरण द्वारा समाप्त हो,
 - (b) यदि छह महीने से अधिक समय के लिए एलएलपी के भागीदारों की संख्या कम होकर दो से नीचे हो गई हो,
 - (c) यदि एलएलपी ऋण चुकाने में अक्षम हो,
 - (d) यदि एलएलपी ने भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा या सार्वजनिक व्यवस्था के हितों के खिलाफ काम किया है,
- {1 M Each}

- (e) यदि एलएलपी ने लगातार पांच वित्तीय वर्षों के लिए रजिस्ट्रार के पास खाता और शोधन क्षमता या वार्षिक रिटर्न का विवरण दाखिल करने में चूक की है, या
- (f) यदि प्राधिकरण की राय में एलएलपी को समाप्त करना उचित और न्यायोचित है।

Answer 6:

(a) साझेदारों के दायित्व:- (धारा 9, 10)

- (1) **साझेदारों के सामान्य कर्तव्य :-** साझेदारों के लिये यह आवश्यक है कि वह फर्म के व्यापार को (i) अधिकार सामान्य लाभ। (ii) एक दूसरे के प्रति न्यायपूर्ण तथा विश्वासपात्र रहकर। (iii) किसी साझेदार अथवा उसके प्रतिनिधि को सही हिसाब-किताब तथा फर्म के कार्य को प्रभावित करने वाले सही तथ्यों की सूचना देकर, चलाये। {1 M}
- (2) **कपट या जानबूझकर लापरवाही के लिए क्षतिपूर्ति :-** यदि कोई साझेदार फर्म के व्यापार में कोई कपटपूर्ण कार्य या जानबूझकर लापरवाही करता है, तो इससे होने वाली हानि के लिए वह अन्य साझेदारों के प्रति क्षतिपूर्ति के लिए उत्तरदायी होता है। {1 M}
- (3) **बिना पारिश्रमिक के विवेकपूर्वक कर्तव्यों का निर्वाह करना :-**
- प्रत्येक साझेदार के लिये यह आवश्यक है कि वह फर्म के व्यापार से सम्बन्ध अपने कर्तव्यों का निर्वाह पारिश्रमपूर्वक करें। {1 M}
 - उसका कर्तव्य है कि वह अन्य साझेदारों को अपने ज्ञान और योग्यता का लाभ उठाने का अवसर दें।
- (4) **हानियों को सांझा करना :-** सभी साझेदारों के लिए यह आवश्यक है कि वह फर्म के द्वारा उठाई गई हानि का बंटवारा समान रूप से करें। {1 M}
- (5) **किन्हीं लाभों का हिसाब देना :-** यदि कोई साझेदार फर्म के लिये किये गये किसी लेनदेन में से। {1 M}

अथवा

- फर्म की अथवा फर्म के व्यापारिक सम्बन्धों से अथवा उसके नाम से अपने लिये कोई गुप्त लाभ अर्जित करता है, तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह उक्त प्राप्त हुए लाभ का हिसाब प्रस्तुत करे और उसका भुगतान फर्म को करें।
- (6) **प्रतिस्पर्द्धी व्यवसाय के लाभों के लिए हिसाब देना तथा भुगतान करना :-** यदि एक साझेदार फर्म जैसा ही या उसका प्रतियोगी व्यापार करता है, तब उसे फर्म को उक्त व्यापार के समस्त लाभों का हिसाब प्रस्तुत करना चाहिये और उसे देना चाहिये फर्म किसी भी हानि के प्रति उत्तरदायी नहीं होगी। {1 M}

Answer:

(b) **साझेदार का दिवालियापन (Insolvency of a partner) :-**

- दिवालिया साझेदार को एक साझेदार के रूप में चलाये नहीं रखा जा सकता है।
- वह ठीक उसी तिथि से साझेदार नहीं रहेगा जब दिवालिया आदेश दिया जाता है।
- दिवालिया साझेदार की सम्पत्तियां उसके दिवालिया आदेश की तिथि के बाद किये गये फर्म के कार्यों के लिए दायी नहीं होती।
- फर्म भी दिवालिया आदेश की तिथि के बाद दिवालिया साझेदार के किसी भी कार्य के लिए दायी नहीं होती। {3 M}
- साधारणतः, लेकिन अकाट्यतः नहीं, एक साझेदार का दिवालिया होना फर्म को समापन की ओर ले जायेगा, लेकिन साझेदार ऐसा ठहराव करने के लिए पूरी तरह से सक्षम है, कि एक साझेदार के दिवालिया हो जाने से फर्म का समापन उत्पन्न नहीं होने देंगे।

साझेदार की मृत्यु (Death of a Partner) :-

- मृतक साझेदार की सम्पत्ति उसकी मृत्यु के पश्चात् फर्म के किसी कार्य के लिये उत्तरदायी नहीं होगी।
- जनता को अथवा फर्म के साथ व्यवहार रखने वाले व्यक्ति को इस आशय का नोटिस जारी किया जाये यह आवश्यक नहीं है।

{3 M}

— ** —

PAPER : BUSINESS CORRESPONDENCE & REPORTING

The Question Paper comprises of 5 questions of 10 marks each.
 Question No. 7 is compulsory. Out of questions 8 to 11, attempt any three.

SECTION-B : BUSINESS CORRESPONDENCE & REPORTING (40 MARKS)

Answer 7:

- (a) Non-verbal communications such as body language and visual cues affect the quality of interaction among individuals or group. An individual's facial expressions, stances, gestures, touches, and other physical signals constitute body language of communication. For example, leaning forward may mean friendliness, acceptance and interest, while crossing arms can be interpreted as antagonistic or defensive posture. {1 M}
- {1 M}

Answer:

- (b) (i) Glittering
 (ii) Inconstancy
 (iii) Varun said that Every Kid should learn coding. {1 M Each}

Answer:

- (c) **"Electronic Gadgets"-** Risky affair for youth. {1 M}
- It is very common these days that people use electronic gadgets in every sphere of life. For the sake of listening music they overdo it and risk their life. There are some live examples. An electrician failed to repair the iron because of his earphones addiction. You may find many earphone addicts commute by the metro every day. We sported a duffel bag and the bomb scare lasted for several minutes. Suddenly a youth came and took his bag and he is totally unaware of the situation just because of his earphones addiction. {4 M}

Answer 8:

- (a) (i) The possible reasons behind employees quitting the company after acquiring higher qualifications could be an unstable future and lack of growth in ABC Insurance Co. Ltd. {2 M}
- (ii) Yes, there is a need to amend the policy of educational reimbursement. For ex: an employee shall at least serve the company for a minimum of three years after seeking such reimbursement. {1 M}
- (iii) In order to overcome high employee attrition problem, employer should ensure the upgraded level of company. Employees should be provided with utmost growth and ensured satisfaction. {2 M}

Answer:

- (b) (i) **Recycling**
1. **Meaning**
 - 1.1 Prcs. of reusing
 - 1.2 Imp. to recycle
 - 1.2.1 to save natural resources
 2. **Waste recycling**
 - 2.1 Help to save energy
 - 2.2 Reduce pllutn.
 - 2.3 Imp for envt. & humans
- {2 M}

3. **Plastic Material**
- 3.1 Reduce Pollution
- 3.1.1 Water Pollution
- 3.1.2 Air Pollution
- 3.2 Imp to have waste disposal system

Key Note –

- | | | | |
|----|------|---|-------------|
| 1. | Prcs | - | Process |
| 2. | Imp | - | Important |
| 3. | Env | - | Environment |
| 4. | & | - | And |
| 5. | Sysm | - | System |

{1 M}

(ii) Summary :

Recycling is regarded as the process of reusing the items which are generally regarded as waste but are of great utility. It ensures the conservation of natural resources for future generation along with saving energy. Recycling of plastic material also helps in reducing air and water pollution. In short, we can say that recycling is the best way to have ecofriendly environment.

{2 M}

Answer 9:

- (a) Listening for Understanding :** We are bombarded by noise and sound in all our waking hours. We 'hear' conversations, news, gossips and many other forms of speech all the time. However, most of it is not listened to carefully and therefore, not understood, partially understood or misunderstood. A good listener does not only listen to the spoken words, but observes carefully the nonverbal cues to understand the complete message. He/she absorbs the given information, processes it, understands its context and meaning and to form an accurate, reasoned, intelligent response.
- The listener has to be objective, practical and in control of his emotion. Often the understanding of a listener is colored by his own emotions, judgments, opinions, and reactions to what is being said. While listening for understanding, we focus on the individual and his agenda. A perceptive listener is able to satisfy a customer and suggest solutions as per the needs of the client.

{1 M}

{1 M}

Answer:

- (b) (i)** The entire stretch of highway was cleaned by the crew.
- (ii)** The homeowners remodeled the house to help it sell.
- (iii)** Socrates said that virtue is its own reward.

{1 M Each}

Answer:

- (c) The Pros and cons of online education in India**
- By XYZ**

Pros and Cons of Online Classes – The widespread outbreak of coronavirus has led to moving towards online classes by schools, colleges, coaching's, etc. Although online classes were already in place in many places, COVID-19 has paved a new way of teaching all over the country through online classes. Almost all schools, colleges, universities, etc. have now started online classes for the students so as to continue the studies in this time of pandemic. These online classes are being helpful for the teachers and students in completing the syllabus of the class which has not been possible in any other way. At present, both teachers and students have adopted this new model of education and are trying to get used to it with each passing day. But along with various advantages of online classes, there are some disadvantages too. Students are facing some difficulties in online classes like difficulty in clearing doubts

{Any 5 points each 1 Mark}

properly, network issues and many more. Along with this, many still believe that online classes can never be an alternative to brick and mortar classes. Here, we have listed some of the pros and cons of online classes. Read the full article to know about all the pros and cons of online classes.

Pros of Online Classes

Following are the pros of online classes-

Study Anywhere – Online classes are available to a student sitting anywhere in the world provided he/she has a proper internet connection. So, if students are not in the city of their school or college then also they can avail the online classes easily. All they need to have is a working internet connection.

Elimination of travel time and Cost –

Online classes have eliminated the time and cost required to reach the school or college. In this way students are saving a lot of their precious time which they can utilize in any other productive work. Also, the cost incurred in daily travel to school and back to home has been totally eliminated with online classes.

Prevention of loss of studies – In this time of pandemic, online classes have come up as a boon for students. This is because if schools and colleges did not use online classes for studies, students would have wasted a lot of time in the session and it would have been really difficult to cover the entire course later. Through online classes, the session is going on at a similar pace as it would have been in offline classes.

Individualized study – Online classes provide an individualized study environment to a student where he/she can study alone. Many times, students become shy in asking queries in front of the entire class but in online classes no one is around, so students can easily ask questions.

Moreover, this individualized study also prevents students from any kind of disturbance.

Monitoring by Parents – With the help of online classes, parents are also able to check and know what their children are studying, how teachers are teaching in the class. Also, they can also motivate their children to take up doubts. Basically, online classes also involve parents in the studies of students which was not the same in case of offline classes.

Introduction to new technologies – Online classes have introduced students to new technologies. They now know how to use a particular software through which the school is teaching or have knowledge about various other platforms which are being used for online classes. So, these classes are also making the students technologically advanced.

Cons of Online Classes

As online classes have emerged as the only solution for education during lockdown, there are many cons related to it. However these can be minimized with a little care.

Network Issues - One of the biggest problems of online classes is network issues. It has been seen students struggle a lot to connect to the session due to internet issues. Many times, teachers are not audible, not visible and much more. In such cases of network disruption, all the students start to talk at the same time which again creates another mess. So, network issues must be resolved for proper conduction of online classes.

Lacks One to One teaching - Online classes lack one to one teaching means these lack proper communication between students and teachers. Although students have the option to ask their queries in the online classes also but students find it difficult to get their doubts solved in a proper way. So many students are asking or putting their queries in the chat section that some are missed.

Continuous Use of Mobile/Laptop - One major concern of online classes is that students have to be on electronic devices like mobile phones, laptops or tablets

continuously for 5-6 hours. This is not beneficial for students and will also cause health issues like eye strain to the students.

Requires Self-Discipline - In online classes, teachers are not able to monitor the students in the same way as offline classes, so these require a student to be self-disciplined. If a student is not disciplined, he/she may not pay attention to what the teacher is teaching in the class.

Proper utilization of online classes can lead to a new model of education involving online classes along with offline classes. But, proper care should be taken to minimize the cons of online classes.

Answer 10:

- (a) Formal communication: Formal Communication, both oral and written, follows certain rules, principles and conventions in conveying the message,. The hierarchy in the organization has to be followed. Formal format, style and language have to be used. The communication pattern can be vertical, horizontal or diagonal. {2 M}

OR

Encoding is the process of turning thoughts into communication. The encoder uses a 'medium' to send the message – a phone call, email, text message, face-to-face meeting, or other communication tool. The level of conscious thought that goes into encoding messages may vary. {2 M}

Answer:

- (b) (i) Brief
(ii) Mysterious
(iii) The angry mother jeered to her son if he supposed that he knew better than his own father. {1 M Each}

Answer:

- (c) **Project to interconnect rivers in India**
- **By XYZ**

New Delhi, 16 July. The interlinking of river project is a Civil Engineering project, which aims to connect Indian rivers through reservoirs and canals. The farmers will not have to depend on the monsoon for cultivation and also the excess or lack of water can be overcome during flood or drought. You will be surprised to know that India has approx four percent of the water available, and India's population is around 16 percent of the world's population. But every year, hundreds of millions of cubic cusec water flows into the ocean and India has to meet its needs with only 4 percent of the water.

Every project has two aspects, but we should focus on how much more people will get benefit from this project. This article is based on the interlinking of the river project, in which its history and the benefits of this project are explained.

What is the interlinking River project?

This project will connect 60 rivers of India, including river Ganga.

Hopefully, with the help of this project, there will be a reduction in the dependence of farmers on uncertain monsoon rains and there will also be millions of cultivated land for irrigation. This project is divided into three parts: North Himalayan river link constituents; Southern Peninsular Component starting from 2005, Interstate interlinking of rivers. This project is being managed under the National Water Development Authority of India (NWDA), Ministry of Water Resources.

- This project can solve the problem of drought and flood because at the time of need the river which causes flood can give water to the area of the river which has a shortage of water because the water can be stored or water can be transferred from

{Any 5 points each 1 Mark}

water surplus area to the deficit. Ganga and the Brahmaputra region can get rid of floods that come every year with the help of this project.

- The irrigation, land will also increase by about 15 percent.
- 15,000 km of river and 10,000 km of navigation will be developed. Thereby reducing the transportation cost.
- Large scale afforestation and about 3,000 tourist spots will be built.
- This project will solve the problems of drinking water and financially also will solve the problem.
- It is also possible to get jobs for landless farmers in rural areas.

Disadvantages of Interlinking River Project

There may be advantages as well as disadvantages of the project. Rivers are being considered an integral part of our life from the beginning, and any kind of human intervention can prove to be destructive. For the completion of the Interlinking River project, many big dams, canals, and reservoirs will have to be constructed due to which the surrounding land will become swampy and will not be suitable for agriculture. This can also reduce the production of food grains. Where or in which area to bring so much water, which canal is to be transferred, it is mandatory to study and research it adequately. The cost of this project in 2001 was Rs. 5,60,000 crore but in reality, there is a possibility that it will be more.

Taking the water of Ganga above the Vindhya towards Cauvery, will cost a lot more and for this, large diesel pumps will be used, more than 4.5 lakhs people will be almost displaced, 79,292 forests will also be submerged in water. It can also be understood that without joining river the reality, there is a possibility that it will be more.

Taking the water of Ganga above the Vindhya towards Cauvery, will cost a lot more and for this, large diesel pumps will be used, more than 4.5 lakhs people will be almost displaced, 79,292 forests will also be submerged in water. It can also be understood that without joining rivers, the problem of flood and drought can be solved.

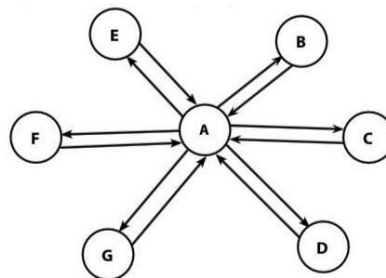
Answer 11:

(a) Wheel & Spoke Network :

This is an organization where there is a single controlling authority who gives instructions and orders to all employees working under him/her. All employees get instructions directly from the leader and report back to him/her. It is direct and efficient for a small business/company, but inappropriate way of communication in a large organization with many people. A company with many employees needs more decision makers or nothing would get done. Can a large conglomerate like Reliance or Tata Sons have one person making decisions? Moreover, if the central figure is not competent, the entire business will suffer.

{1 M}

{1 M}



Wheel and Spoke Network

Answer:

- (b)**
- | | | |
|--------------|------------------------------|--------------|
| (i) | To be a pioneer | } {1 M Each} |
| (ii) | Perplexed | |
| (iii) | Will a story be told by you? | |
| (iv) | Conflict | |

Answer:

- (c) Letter informing about the postponement of interview date

Sender's address

Date

Receiver's designation

Receiver's address

Subject – Letter regarding the postponement of interview date

Dear Mr Bansal

This letter is to inform you that the interview that was scheduled with Mr. Gupta, CEO, ABC Company, has been postponed. The interview was planned to take place on 1 Oct, 2020 but this has changed. The meeting has been postponed to 15 Oct, 2020. The venue and the timing of the interview meeting however remains the same.

It has been postponed due to some unavoidable circumstances. In case of any other queries, you can either revert to the same letter or drop in an e-mail on our official email id.

We apologies for the inconvenience caused.

Thank you

Yours sincerely

Name of Sender

Designation of Sender

**